15

अटल ध्रुव

राजा उत्तानपाद महाप्रतापी थे। उनकी दो रानियाँ थीं सुनीति और सुरुचि। दोनों के एक–एक पुत्र था। सुनीति के पुत्र का नाम ध्रुव और सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था।

सुनीति बड़ी रानी थी परन्तु राजा छोटी रानी सुरुचि को ही मान देते थे। सुरुचि जैसा कहती, राजा वैसा ही करते। राज्य के सभी लोग सुरुचि का ही आदर करते थे। सुनीति को कोई नहीं पूछता था। सुनीति अपने पुत्र ध्रुव के साथ महल में अकेली रहती थी।

एक दिन राजा उत्तानपाद दरबार में बैठे थे। नृत्य–गान हो रहा था। सब प्रसन्न थे। राजकुमार उत्तम राजा की गोद में बैठा खेल रहा था। इतने में खेलते–खेलते ध्रुव भी वहाँ आ पहुँचा। पिता की गोद में उत्तम को खेलता देख उसकी भी गोद में बैठने की इच्छा हुई। वह दौड़ता हुआ गया और राजा की गोद में चढ़ बैठा।

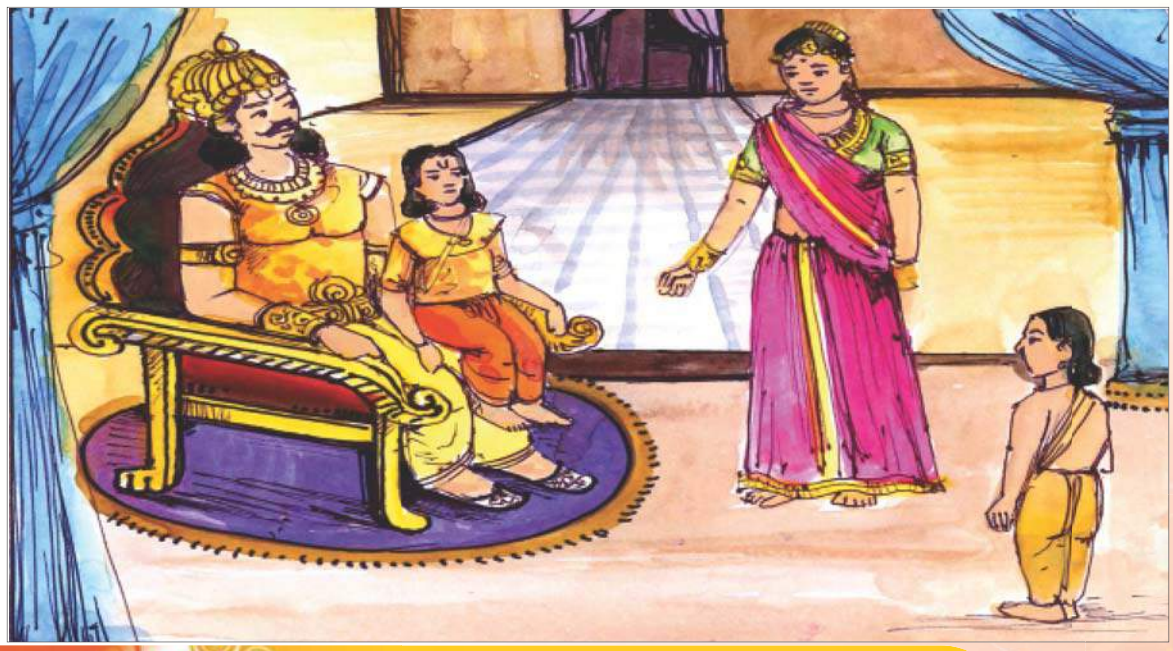

पास ही खड़ी रानी सुरुचि को यह अच्छा नहीं लगा। उसने ध्रुव को राजा की गोद से उतार दिया। ध्रुव को उठाते हुए बोली, ''तुम यहाँ नहीं बैठ सकते। तुम्हारा यहाँ कोई अधिकार नहीं है।''

ध्रुव जिद करने लगा। सुरुचि बालक के भोलेपन पर क्रूरता से हँसी और बोली, ''तू मेरा पुत्र बनकर आता तो यहाँ बैठता। अपने पिता का प्रेम पाने के लिए तुझे दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। ध्रुव! तू जंगल में जा और भगवान का भजन कर।''

भरी सभा में ध्रुव को यह अपमान सहन नहीं हुआ। वह चुपचाप वहाँ से बाहर आया। दौड़ता हुआ माँ के पास गया और उसकी गोद में मुँह छिपाकर रोने लगा।

सुनीति घबरा गई। ध्रुव कुछ नहीं बोला। सिसक–सिसक कर रोता ही रहा। सुनीति के बार–बार पूछने पर उसने राज दरबार वाली घटना बताई। सुनीति की आँखों में आँसू आ गए। वह बोली, ''ध्रुव ! चिंता मत कर ईश्वर ने चाहा तो तेरी मनोकामना जरूर पूरी होगी।''

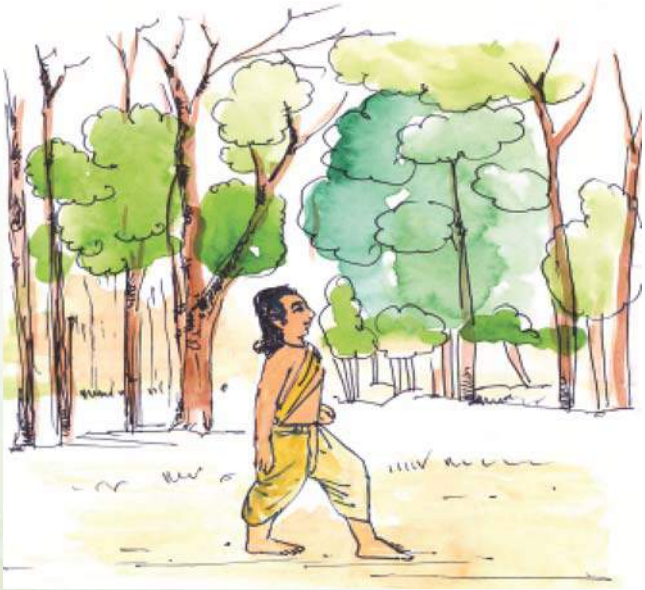

माँ की बात सुन ध्रुव भगवान से मिलने की जिद करने लगा। माँ ने उसे बहुत समझाया। जंगल का भय बताया, ध्रुव नहीं माना। वह जंगल में चला गया। जंगल में उसे कई तपस्वी मिले। उन्होंने भी ध्रुव को हठ छोड़ने का कहा, पर वह टस से मस नहीं हुआ। उसके दृढ़ निश्चय को देखकर एक तपस्वी ने उसे जप करने के लिए एक मंत्र दिया। ध्रुव यमुना के किनारे बैठकर मंत्र जाप करने लगा।

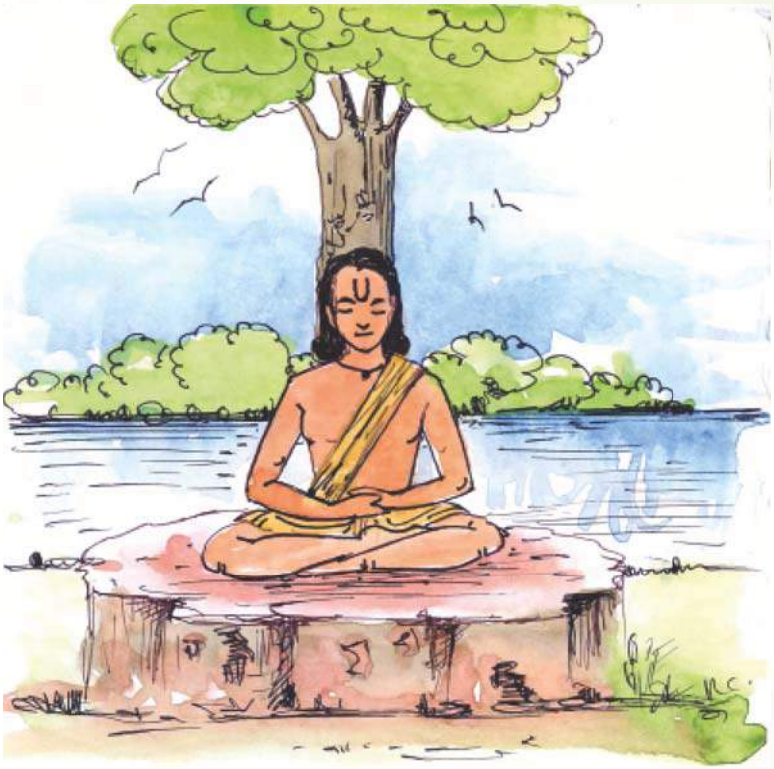

दिन बीतते गए। पहले वह कंदमूल खाकर रहने लगा। बाद में केवल पानी पीकर तथा अन्त में निराहार रहकर भजन करने लगा उसने एक पैर पर खड़े होकर जप किया। जप करते छह महीने बीत गए। मंत्र जाप के अलावा उसे कुछ याद नहीं रहा।

एक दिन उसे लगा कि किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा है उसने

आँखे खोलकर देखा। सामने ईश्वर खड़े थे। वह सिर झुकाकर प्रार्थना करने लगा। ईश्वर ने उसकी भक्ति से प्रसन्न हो वरदान दिया ''तुम्हारी मनोकामना पूरी हो।''

ध्रुव आशीर्वाद पाकर महल की ओर चल दिया नगर में उसका खूब स्वागत हुआ। राजा उत्तानपाद अपनी गलती पर बहुत पछताए वे सारा राजपाट ध्रुव को सौंप कर वन में चले गए। ध्रुव राजा बना। रानी सुनीति राजमाता बनी ।

अपने दृढ़ निश्चय तथा अटल भक्ति के कारण ध्रुव आज भी आदर के साथ याद किया जाता है।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

भय	–	डर
आशीर्वाद	–	आशीष
अटल	–	स्थिर
ईश्वर	–	भगवान
क्रूरता	–	निर्दयता
तपस्वी	–	तप करने वाला
मनोकामना	–	मन की इच्छा

उच्चारण के लिए

ध्रुव, आशीर्वाद, क्रूरता, तपस्वी, ईश्वर, प्रार्थना

सोचें और बताएँ

1. राजा उत्तानपाद की रानियों के क्या नाम थे ?
2. सुरुचि ने ध्रुव के साथ कैसा व्यवहार किया ?
3. सुनीति किस बात से घबरा गई थी ?

लिखें

1. 'और', 'तो', 'कि', 'पर' आदि शब्द लगाकर वाक्य पूरे करो
   (क) ईश्वर ने चाहा ..... तेरी मनोकामना पूरी होगी।
   (ख) तपस्वी ने ध्रुव को हठ छोड़ने को कहा ..... वह टस से मस नहीं हुआ।
   (ग) ध्रुव दौड़ता हुआ गया ..... राजा की गोद में बैठ गया।
   (घ) सुरुचि ने कहा ..... अपने पिता का प्रेम पाने के लिए तुझे दूसरा जन्म लेना पड़ेगा।
2. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें
   (क) राजा उत्तानपाद ..... राजा थे। (महाप्रतापी / अत्याचारी)
   (ख) सुनीति के पुत्र का नाम ..... था। (उत्तम / ध्रुव)
   (ग) ध्रुव तपस्या करने ..... गया। (जंगल / मंदिर)
   (घ) ईश्वर ने उसकी ..... से प्रसन्न हो वरदान दिया। (भक्ति / शक्ति)
   (ङ) ध्रुव राजा बना और रानी ..... राजमाता बनी। (सुनीति / सुरुचि)
3. ध्रुव किसका पुत्र था ?
4. सुनीति ध्रुव के साथ महल में अकेली क्यों रहती थी ?
5. सुरुचि ने राजा की गोद से ध्रुव को क्यों उतारा ?

6. ध्रुव को जंगल में क्यों जाना पड़ा ?
7. ध्रुव ने ईश्वर की भक्ति कैसे की ?

भाषा की बात

- निम्नलिखित शब्दों के जोड़े बनाएँ।

नाना	–	नानी
मौसा	–	.....
चाचा	–	.....
मामा	–	.....
राजा	–	.....

- नए शब्द बनाएँ

चढ़	–	चढ़ना
पढ़	–	.....
सुन	–	.....
चल	–	.....
कर	–	.....

यह भी करें –

- इस कहानी को याद करें और सुनाएँ।
- शिक्षक की सहायता से विद्यार्थियों द्वारा कहानी को अभिनय के रूप में प्रस्तुत करें।

वाणी चाँदी है, मौन सोना है, वाणी पार्थिव है, पर मौन दिव्य। –कहावत।

केवल पढ़ने के लिए

पतंगों का मौसम

मौसम आज पतंगों का है
नभ में राज पतंगों का है
इंद्रधनुष के रंगों का है
मौसम नई उमंगों का है।

निकले सब ले डोर–पतंगें
सुंदर–सी चौकोर पतंगें
उड़ा रहे कर शोर पतंगें
देखो चारों ओर पतंगें।

उड़ी पतंगें बस्ती–बस्ती
कोई महँगी, कोई सस्ती
पर न किसी में फूट–परस्ती
उड़ा–उड़ा सब लेते मस्ती।

चली डोर पर बैठ पतंगें
इठलाती–सी ऐंठ पतंगें
नभ में कर घुसपैठ पतंगें
करें परस्पर भेंट पतंगें।

हर टोली ले खड़ी पतंगें
कुछ छोटी कुछ बड़ी पतंगें
आसमान में उड़ीं पतंगें
पेच लड़ाने बढ़ी पतंगें।

कुछ के छक्के छूट रहे हैं
कुछ के डोरे टूट रहे हैं
कुछ लंगी ले दौड़ रहे हैं
कटी पतंगें लूट रहे हैं।